SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

" वर्तमान समय के शिक्षक–शिक्षा ढांचे में बुनियादी सुधार की आवश्यकता"

रीना पंवार
शोधार्थिनी, शिक्षाशास्त्र
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह
शोध पर्यवेक्षक
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

जब व्यक्ति की समझ में यह बात आ जाती है कि वह सुरक्षित एवं आरक्षित है तो वह आराम की स्थिति में आ जाता है और उसे नींद आने लगती है। भारत में शिक्षा को सुरक्षित और आरक्षित बनाने के लिये काफी समय से अत्यधिक प्रयास किये जा रहे हैं और जिस जिसकों यह स्थिति आरामदायक लग रही है उसे नींद आना स्वाभाविक है। जब से यह नींद परम्पर शुरू हुई है, प्रत्येक स्तर पर शिक्षा का पतन होता जा रहा है। इससे विद्यार्थी और शिक्षक कोई अछूता नहीं रहा है। बी0एड0 एवं बी0टी0सी0 जैसे नौकरी की गारंटी वाले पाठ्यक्रमों पर पुनर्विचार अब आवश्यक हो गया है। प्रसन्नता है कि पी0एच0डी0 में नौकरी की कोई गारंटी नहीं है।

यही बात मानने में अब बिल्कुल भी संकोच नहीं है कि वर्तमान में शिक्षक– शिक्षा एवं शैक्षणिक स्तर गिराकर निम्नतम स्तर तक पहुँचा दिया गया है। जिसकी कल्पना लार्ड मैकाले ने की होगी। उसने निश्चित ही भारतीयों की मानसिकता का गहराईयों से अध्ययन किया होगा जो बिना सोचे समझे अपने फायदे की बात तुरंत समझ लेता है। वर्तमान में इस समझ की खबरें और सजीव प्रसारण समाचार पत्रों एवं न्यूज चैनलों के माध्यमों से मिलता रहता है। इनमें केमीकलों से दूध बनाना, जानवारों की हड्डियों से घी तैयार करना, फलों एवं सब्जियों को इंजैक्शन लगाकर एक रात में बिक्री योग्य बना देना, पड़ौसी द्वारा पड़ौसी का अपहरण कर लेना,

निठारी में लगभग 500 नर कंकालों का मिलना, तीन डॉक्टरों द्वारा मिलकर 300 जीविक लोगों कीलगभग 300 किडनियाँ निकाल लेना, बम्बई के शराबखानों (बार) में पढ़ी–लिखी लड़कियों का पकड़ा जाना, ब्रह्मकुमारियों एवं सम्वासनियों के साथ बलात्कार की घटनायें, 1 जनवरी 2008 को अद्धरात्रि में मुम्बई में न्यू ईयर सेलिब्रेशन के मौके पर लोगों के एक समूह द्वारा लड़कियों से छेड़छाड़ की घटनायें और अंत में शिक्षकों द्वारा छात्राओं के साथ नियम विरुद्ध आचरण को अंजाम देकर पूरी शिक्षक जाति को कलंकित करना।

अन्य बहुत सी घटनायें हैं, लेकिन इन घटनाओं को अंजाम देने वालों के सम्बन्ध में जानकारी करने पर नता चला तो ये सभी अपराधी शिक्षित एवं उच्च शिक्षित निकले। विश्लेषण से पता चलता है कि इन अपराधियों में सोचने समझने की शक्ति या तो है ही नहीं या समाप्त हु चुकी है जो नहीं समझ सके कि उनका यह कृत्य किसी अपने को ही पीड़ा पहुँचाता है किन्तु ऐसा नहीं है। थोड़ा सा भी शिक्षित व्यक्ति प्रत्येक कार्य, जिससे उसका भला हो सकता है सोच समझकर करता है, इन्होंने भी अपना फायदा सोचकर किया होगा। यहाँ यह ध्यान रखना है कि लार्ड मैकाले की सोच यहाँ सार्थक प्रतीत होती है अर्थात् वह अपनी योजना में सफल है क्योंकि प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति उसकी साम्राज्यवादी शिक्षा नीति का शिकार होकर अपना अलग साम्राज्य स्थापित करना चाहता है जिसमें वह कुछ भी अनैतिक करने के लिये स्वतंत्र हो, और आज ऐसा ही हो रहा है।

शिक्षक षिक्षा के गिरते स्तर के कारण :–

1. सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारे शिक्षा निर्माताओं की है जो अभी तक अपना स्वयं का पाठ्यक्रम नहीं निर्मित कर पाये हैं।
2. शिक्षक–शिक्षा संस्थान भी जिम्मेदार हैं, जो नियमों का ठीक से पालन नहीं करते हैं।
3. शिक्षा का प्रत्येक स्तर पर अत्यधिक महंगा होना भी एक कारण है। अतः समझा जा सकता है जो भी महंगी शिक्षा प्राप्त करेगा वोसबसे पहले स्वयं पर लागत वसूल चाहेगा।
4. निजी संस्थानों को मान्यता देते समय मानकों की अनदेखी करना।
5. पाठ्यक्रम बनाते समय मानसिक स्तर का ध्यान नहीं रखा गया है अर्थात किस उम्र का मानसिक स्तर क्या बात अच्छी तरह से समझ सकता है।

6. संस्थानों के पास शोध कार्य की अत्यधिक कमी है साथ ही संस्थान भी नहीं है।
7. शिक्षा कमाने योग्य तो बना रही है लेकिन नैतिक मूल्यों का इसमें अभाव है।
8. शिक्षण संस्थानों द्वारा पूरा वेतन न देने से अच्छे शिक्षक छोड़ कर चले जाते हैं।

षिक्षक शिक्षा के सुधार के लिये आवष्यक सुधार :–

1. शिक्षक शिक्षा संसीान कम वेतन देने के चक्कर में अयोग्य शिक्षा रखना बंद करें।
2. मौजूदा शैक्षणिक ढांचे में बुनियादी सुधार कर देश में ऐसी शिक्षा व्यवस्था स्थापित होनी चाहिये जो बदले हुए आर्थिक माहौल में नौकरियाँ प्राप्त करने व स्वयं का उद्यम शुरू करने लायक बना सके।
3. सरकार को सुनिश्चित करना चाहिए कि उच्च शिक्षा में दी जा रही भारी सब्सिडी का लाभ उन छात्रों तक पहुँचे जो इस शिक्षा से वंचित रह गये हों।
4. शैक्षिक ढाँचे में कौशल विकास के पहलू को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिये।
5. छात्रों के ज्ञान स्तर पर के सही आंकलन के लिये राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा प्रणाली लागू की जानीचाहिये।
6. परम्परागत ज्ञान को संरक्षण देना अनिवार्य है।
7. जल, ऊर्जा, पर्यावरण, शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, रोजगार, नागरिक अधिकारों एवं कर्त्तव्यों से सम्बन्धित पाठ्यक्रम शिक्षक शिक्षा में आवश्य शामिल किये जायें।
8. यू0जी0सी0, एन0सी0टी0ई0 एवं राज्य व केन्द्र सरकारें शिक्षण शिक्षा संस्थानों को मानकों का पालन कड़ाई से करवायें।
9. क्षेत्रवाद, परिवारवाद को भूलकर भारतीयता सिखाना शिक्षण संस्थानों का प्रथम उद्देश्य निर्धारित किया जाये।
10. मातृ भाषा को ज्यादा प्रभावी ढंग से पालन करने के लिये कहा जाये।
11. व्यक्ति को शिक्षण कार्य उसकी योग्यता द्वारा मिले न कि आरक्षण से।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

12. राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के अध्यक्ष सैम पित्रोदा द्वारा प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह को मौजूदा शैक्षिक ढांचे में आवश्यक बदलाव के लिये अपनी दो रिपोर्ट अब तब सौंपी जा चुकी हैं, जिनका शीघ्र क्रियान्वयन होना चाहिये।

निष्कर्ष :– वर्तमान में हमें ऐसी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जो व्यक्ति को कमाने योग्य तो बनाये साथ ही उसमे नैतिकता, परोपकार, लोककल्याण, भाईचारा, अनुशासन एवं शान्ति की भावना का विकास करें इसके लिये हमें प्रारम्भिक शिखा का स्तर बेहद गुणात्मक बनाना होगा। प्रारम्भिक शिखा स्तर से लेकर शिक्षक शिखा स्तर तक शिखा पद्धति में हमें गाँधी जी का जीवन दर्शन, भगवान महावीर जी का जीवन दर्शन, चाणक्य का अर्थशास्त्र, कर्म और हरीशचन्द्र की दानवीरता, एकलव्य की तरह लक्ष्य भेदने की कला, रानी लक्ष्मीबाई की वीरता, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार भगत सिंह और लाला लाजपत राय जैसी राष्ट्र भक्ति, सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसी सहनशीलता, स्वामी विवेकानन्द जैसी गणितज्ञता, राजा राम मोहन राय की तरह बुराइयों से लड़ने की क्षमता, वीर अब्दुल हमीद और इब्राहिम गार्दी की तरह देश पर मर मिटने का जज़्बा पर आधारित पाठ्यक्रम शामिल करने होंगे।

पूरी दुनिया में तकनीकी क्षेत्र में सुपर पावर का दर्जा पाये जापानी लोग अपने बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा के लिये जापान में स्थित भारतीय स्कूलों का रुख कर रहे हैं क्योंकि इन पाठ्यक्रमों में ऊपर दिये गये महानायकों पर आधारित पाठ्यक्रम शामिल हैं। जहाँ उनके बच्चों को गुणवत्ता युक्त एवं प्रासंगिक शिक्षा मिलती है जो भारतवर्ष के लिए गर्व का विषय है।

अतः स्पष्ट है यदि इनप सुझावों पर विचार कर इन महानायकों को पाठयक्रम में पूर्ण स्थान दिया जाये तो भारतीय शिक्षा पद्धति गुणात्मक बन सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Ausubel, D.P. (1963), Cognitive Structure and the facilation of meaningful verbal leaning, Jr. of Teacher Education, 14, 217-222.
2. Agarwal, Y.P. (1988), Research in Emerging Fields of EducationL Concepts, Trands and prospects, Sterling Publishers Pvt. Ltd., New Delhi.
3. Best J.W. and Khan, J.V., Research in Education, Prentice Hall, New Delhi, 1989.

4. Koul Lokesh (1998), Methodology of Educational Research, Vikas Publishing House, New Delhi.

5. Rampal Singh, Shiksha Vyavstha Tatha Vidhyalaya (2009/10), Sangthan, Agarwal Publication, Agra.

6. The School, Teacher-Student Relations and Values (2009), APH Publishing Corporation, New Delhi.

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/03

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

रीना पंवार एवं डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

For publication of research paper title

"वर्तमान समय के शिक्षक–शिक्षा ढांचे में बुनियादी सुधार की आवश्यकता"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com